प्रथम दीक्षांत समारोह

15 नवंबर, 2018

अति विशिष्ट अतिथि
का संबोधन

श्री राधा मोहन सिंह

माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार

डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर
Dr. Rajendra Prasad Central Agricultural University, Pusa, Samastipur

प्रथम दीक्षांत समारोह

15 नवंबर, 2018

श्री राधा मोहन सिंह

माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार

अति विशिष्ट अतिथि
का संबोधन

डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर
Dr. Rajendra Prasad Central Agricultural University, Pusa, Samastipur

माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह जी का डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के प्रथम दीक्षांत समारोह (दिनांक 15 नवंबर, 2018) के अवसर पर संबोधन

महामहिम राष्ट्रपति सह कुलाध्यक्ष, श्री राम नाथ कोविंद जी, माननीय राज्यपाल श्री लालजी टंडन जी, माननीय मुख्यमंत्री, श्री नीतीश कुमार जी, डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के कुलाधिपति, डॉ0 प्रफुल्ल कुमार मिश्र, कुलपति, डॉ0 रमेश चन्द्र श्रीवास्तव, कुलसचिव, डॉ0 रवि नन्दन, विश्वविद्यालय प्रबंध बोर्ड एवं विद्वत परिषद के सदस्यगण, आमंत्रित अतिथि, शिक्षकगण, शिक्षकेत्तर कर्मचारी, पदाधिकारीगण, आज के इस दीक्षांत समारोह में उपाधियाँ ग्रहण करने आये छात्र–छात्राएँ, उनके अभिभावकगण, पत्रकार बंधुओं, देवियों एवं सज्जनों।

मैं सर्वप्रथम आज उपाधि एवं स्वर्ण पदक ग्रहण करने वाले छात्र–छात्राओं एवं उनके परिजनों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। आज का दिन आपके जीवन का

विशिष्ट पल है, जो आपको अपनी शैक्षणिक उपलब्धियों के लिए गौरवान्वित करता रहेगा। साथ ही यह पल आपको अपने परिवार, प्रदेश एवं देश के प्रति कर्तव्यों का बोध कराता रहेगा। उपलब्धियाँ हमेशा हमें एक जिम्मेवारी देती हैं, जिसकी मदद से हम जीवन में और अधिक ऊचाईयों को छू पाते हैं एवं अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर पाते हैं।

ब्रिटिश शासनकाल 1905 में तत्कालीन वायसराय लार्ड कर्जन ने इस राज्य में इम्पीरियल एग्रीकल्चर रिसर्च संस्थान की आधारशिला रखी थी। हालांकि 1934 में भीषण भूकम्प के बाद यह दिल्ली चला गया, जो आजादी के बाद भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के नाम से जाना जाता है जबकि यहां पर यह एक क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र के रूप में कार्यरत रहा। इसी ऐतिहासिक तथ्य को ध्यान में रखते हुए, 1970 में इसी जगह, बिहार के पहले एवं भारत के चौथे विश्वविद्यालय के रूप में राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। हम सभी बिहारवासियों के लिए यह गर्व की बात है कि माननीय प्रधानमंत्री जी की विशेष अभिरूचि के कारण द्वितीय हरित क्रांति को बल देने के लिए 2016 में इस विश्वविद्यालय को डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में परिवर्तित कर दिया गया।

मुझे यह बताते हुए बहुत खुशी है कि केन्द्रीय विश्वविद्यालय में परिवर्तित होने के बाद विश्वविद्यालय ने भारत सरकार के कृषि मंत्रालय के नए लक्ष्यों के अनुसार पाँच नई themes पर कार्य करना शुरू किया। ये पाँच थे : हर खेत को पानी, दलहन फसलों का उत्पादन बढ़ाना, मृदा स्वास्थ्य, किसानों की आमदनी दूनी करना एवं प्रति बूँद ज्यादा उत्पादन। इन पाँचों theme के अर्न्तगत नए अनुसंधान कार्य शुरू किए गए और दो वर्षों में ही नई तकनीकों के रूप में परिणाम दिखने लगे हैं। सौर ऊर्जा एवं एकल फेज पम्प द्वारा सिंचाई के साधन, दलहनी फसलों के बीज उत्पादन, छः चलन्त मृदा परीक्षण प्रयोगशाला द्वारा किसानों के खेत पर जाकर मृदा परीक्षण, किसानों की आमदनी दूनी करने के लिए खाद्य प्रसंस्करण, मशरूम उत्पादन, मधु उत्पादन, पोस्ट हारवेस्ट नुकसान को कम करना इत्यादि पर शोध तथा Efficient Irrigation System पर कार्य प्रमुख है।

विश्वविद्यालय ने किसानों की आमदनी दुगनी करने के प्रयास को भी खुद के उदाहरण से अनुकरणीय बनाया है। अपने साधनों का सही उपयोग करके विश्वविद्यालय

की आमदनी को डेढ़ करोड़ से बढ़ाकर दो वर्षों में ही पाँच करोड़ पहुँचा दिया है। मैं इसके लिए विश्वविद्यालय के सभी कर्मियों को साधुवाद और सफल नेतृत्व के लिए कुलपति डॉ0 रमेश चन्द्र श्रीवास्तव को बधाई देता हूँ।

भारत सरकार के कृषि मंत्रालय ने अपनी तरफ से इस संस्थान को सुदृढ़ करने के लिए काफी सहयोग दिया है। उद्यान एवं वानिकी महाविद्यालय, Centre of Excellence on Embroyo transfer & indigenous breed, मधुमक्खी पालन पर कार्य के लिए एक नया केन्द्र, गुड़ उत्पादन के लिए आधुनिक प्रसंस्करण केन्द्र, बाँस की नर्सरी आदि इस दिशा में प्रमुख कदम है। आने वाले वर्ष में बेतिया में साहीवाल नस्ल का एक केन्द्र, राष्ट्रीय सहकारिता विकास कॉरपोरेशन के सहयोग से एक प्रशिक्षण केन्द्र तथा राष्ट्रीय बीज निगम द्वारा बीज संग्रहण एवं बिक्री केन्द्र, सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों में Fish production by cage culture भी प्रस्तावित है। इससे आने वाले वर्षों में कृषकों को काफी लाभ होगा।

कृषि विज्ञान केन्द्रों को भी और सशक्त बनाया जा रहा है। एक विशेष कार्यक्रम के अन्दर सभी KVKs में

Farm Machineries एवं सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के लिए अलग से सहायता दी जा रही है। उम्मीद है, इससे हमारे KVKs न केवल प्रशिक्षण बल्कि सेवा केन्द्रों के रूप में विकसित होंगे।

केन्द्र सरकार ने बिहार में डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के अन्तर्गत पशु चिकित्सा महाविद्यालय और कृषि महाविद्यालय खोलने की सैद्धांतिक स्वीकृति प्रदान की है, जिसकी स्थापना का कार्य राज्य सरकार से भूमि प्राप्त होते ही प्रारम्भ कर दिया जायेगा।

विश्व बैंक के सहयोग से देश में कृषि शिक्षा को सुदृढ़ करने के लिए राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना प्रारंभ की गई है। इस योजना का उद्देश्य कृषि उत्कृष्टता के नये केन्द्रों की स्थापना करना, पिछड़े राज्यों में कृषि शिक्षा को बढ़ावा देने पर विशेष बल देना, प्रशिक्षण के माध्यम से क्षमता विकास करना, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संपर्क स्थापित करना तथा कृषि विश्वविद्यालयों के प्रत्यायन एवं पाठ्यक्रम को आधुनिक बनाकर गुणवत्ता आश्वासन सुनिश्चित करना है। मुझे आशा है कि यह विश्वविद्यालय भी इस परियोजना से लाभ उठाएगा।

खेती के चहुँमुखी विकास हेतु 'प्रयोगशाला से खेत तक' कार्यक्रम में तेजी लाने हेतु चार नई परियोजनाओं का शुभारम्भ, माननीय प्रधानमंत्री जी ने किया है। ये हैं – स्टुडेंट रेडी, फार्मर्स फर्स्ट, आर्या तथा मेरा गाँव–मेरा गौरव। किसानों का वैज्ञानिकों से सम्पर्क बढ़ाने, तकनीकी आकलन, प्रत्यक्षण, प्रशिक्षण एवं क्षमता विकास के लिए केन्द्र सरकार ने फार्मर्स फर्स्ट परियोजना की शुरूआत की है। ग्रामीण युवाओं में उद्यमिता विकास हेतु क्षमता विकास की महत्ता को समझते हुए स्टुडेंट रेडी कार्यक्रम की शुरूआत की है। कृषि में युवाओं को जोड़ने एवं उनके पलायन को रोकने हेतु कृषि रोजगार के नये अवसरों के सृजन हेतु आर्या कार्यक्रम की शुरूआत की गयी है। ''मेरा गाँव – मेरा गौरव'' योजना के अन्तर्गत गाँव तक वैज्ञानिक खेती की प्रभावी एवं विस्तृत जानकारी को कृषक बंधुओं तक प्रसार हेतु, देश के कृषि विश्वविद्यालयों एवं आई0सी0ए0आर0 के सभी संस्थानों के कृषि विशेषज्ञों को शामिल किया गया है। प्रत्येक कृषि विशेषज्ञ नई तकनीकों के माध्यम से कृषि विकास को बढ़ावा देने हेतु मार्ग दर्शन प्रदान करेगा तथा कृषि संबंधी समस्या का समाधान करने

में, इन संस्थानों की भूमिका के बारे में जागरूकता पैदा करेगा। आधुनिक कृषि विधियों के बारे में किसानों में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए प्रत्येक कृषि वैज्ञानिक को एक गाँव अपनाने की जिम्मेदारी दी गयी है। आशा करता हूँ कि इस कार्यक्रम में यह कृषि विश्वविद्यालय एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेगा।

आज इस दीक्षांत समारोह के अवसर पर मेरी यही शुभकामना है कि यह विश्वविद्यालय जल्द ही देश के अग्रणी विश्वविद्यालय में गिना जाय। यहाँ से विकसित तकनीकें तथा बीज, बिहार के किसानों के लिए खुशी के दिन लाए, उनकी आमदनी दुगनी हो क्योंकि जब किसान खुशहाल होगा तभी देश खुशहाल होगा।

जय जवान! जय किसान! जय विज्ञान!

जय हिन्द